

स्त्वितो गृह्यतिपञ्चमाः 8, 6, 4, 11. आत्मा वै यज्ञस्य यज्ञमानो ऽङ्गान्यस्त्वितः 9, 5, 2, 16. KĀTJ. ÇA. 1, 2, 8. 6, 13. 8, 31. 22, 3, 15, 31. NIR. 8, 2. MBH. 1, 2044. fgg. Acht göttliche Priester sind gezählt AV. 8, 9, 11. Sechszehn Rtvig erscheinen bei grössern Feierlichkeiten, nämlich: Brahman, Udgatar, Hotar, Adhvarju, Brāhmaṇākkhāmsin, Prastotar, Maitrāvaruṇa, Pratiprasthatar, Potar, Pratihartar, Akkha-vāka, Neshṭar, Agnidh, Subrahmanja, Grāvastut und Unnetar KĀTJ. ÇA. 7, 1, 6. fgg.; vgl. ÇAT. BR. 12, 1, 4, 2. fgg. AIR. BR. 7, 1. ĀÇV. ÇA. 9, 4. MBH. 14, 2649. R. 1, 13, 41. AK. 2, 7, 17. आद्यस्त्वित् KĀTJ. ÇA. 20, 1, 5. घर्मस्त्वित् 10, 1, 25. मर्त्यस्त्वित् ÇAT. BR. 13, 1, 4, 4. हविर्यस्त्वित् KĀTJ. ÇA. 9, 12, 16. ऋत्स्त्वित् ÇAT. BR. 4, 3, 4, 5.

1. स्त्वित्य (von स्तु) adj. ved. P. 5, 1, 106. gehörig, regelmässig; zeitig; den Regeln des Cultus angemessen, derselben kundig: तवायं भाग स्त्वित्यः RV. 1, 135, 3. 10, 100, 2. 179, 1. तमोर्षधीर्दधिर् गर्भमृत्वित्यम् 91, 6. VS. 11, 48. 23, 63. होता RV. 1, 143, 1. 3, 41, 2. इन्द्रः 9, 72, 4. तमविया उप वाचः सचते 1, 190, 2. 2, 1, 2. 3, 29, 10. 8, 19, 31. 40, 11. 52, 11. आग्निर्धात्यूत्वित्यः 5, 73, 9. एष ब्रह्मा य स्त्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ÇĀKṢH. ÇA. 9, 6, 6.

2. स्त्वित्य (wie eben) oder स्त्वित्य (P. 6, 4, 175) 1) adj. menstruiend, in der zum Beischlaf geeigneten Periode befindlich: तनु स्त्वित्ये RV. 10, 183, 2. योयैव दृष्ट्वा पतिमृत्विया या (so ist die Lesart herzustellen) AV. 12, 3, 39. सं पितरावृत्विये स्नेधाम् 14, 2, 37. — 2) n. monatliche Reinigung: स्त्वियात्स्त्रियः प्रजा विन्दते TS. 2, 5, 4, 5.

स्त्वियावत् (von 1. स्त्विय) adj. gesetzsmässig, regelrecht, förmlich, feierlich: कृते न स्त्वियावतो मा नो रीरधतं निरे RV. 8, 8, 13. इयं तं स्त्वियावतो धातिरेति नवीयसी 12, 10, 69, 7.

स्त्वय s. u. 2. स्त्विय.

स्हृद् adj. mild, sanft, gnädig NIR. 6, 8. स्हृद्देणे सव्या सचेय यो मा न रियेर्द्वयः पीतः RV. 8, 48, 10. स्हृद्देः सुखो मा नो अय्ये वधुः सुशि-प्रो रीरधन्मन्यै 2, 33, 5. इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीम्यहृद्देः प्रणवन्मि-त्रिह्वाः 3, 54, 10. Zerlegen lässt sich das Wort in श्रु = मृड und द्र. स्हृदो (श्रुड = मृड + पा) f. Biene oder ein anderes Süßigkeit suchen- des Thier NIR. 6, 33. उमा ते बाहू रणया सुसंस्कृत स्हृदे चिद्वृद्धा wie Bienen am Süßen sich ergötzend (weil Indra das Mdu gern genießt) RV. 8, 66, 11.

स्हृद्व्य (श्रुड + वृध्) adj. am Süßen sich ergötzend, s. u. d. vorherg. Art.

श्रु 1) adj. aufgehäuft (von Korn) AK. 2, 9, 23. VJUTP. 148. n. aufge- häuftes Korn MED. dh. 4. = परिपक्वमर्दितधान्य BHAR., = बहुलितधा- न्य SUBHŪTI zu AK. ÇKDR. — 2) n. bewiesene Wahrheit H. an. 2, 239. — Das partic. von श्रु s. oben u. श्रु.

श्रु (von श्रु) f. 1) das Gelingen, Gedeihen, gedeihlicher Zustand, Vollkommenheit, Wohlfahrt, Wohlstand TRIK. 3, 3, 216. H. 357. MED. dh. 5. सत्रस्य श्रुदरसि VS. 8, 52. 18, 11. TS. 5, 4, 10, 5. यामेव मनुश्रुदमाध्री- तामेव यज्ञमान श्रुदोति 6, 6, 4. श्रुदामेव वीर्य एषु लेकेषु प्रतितिष्ठति ÇAT. BR. 13, 1, 2, 2. ĀÇV. GRHJ. 4, 4. श्रुदिकाम Gedeihen —, Wohlstand begehrend KĀTJ. ÇA. 19, 1, 1. 23, 1, 18. 3, 30. 24, 2, 22. ĀÇV. ÇA. 10, 1, 3, 4. परिच्छिन्नप्रभावार्द्धन मया न च विलुना KUMĀRAS. 2, 58. वृत्ताध्ययनार्द्ध AK. 2, 7, 38. H. 838. स जीर्णी मानुषं देहं परित्यज्य पिता हि नः । देवीमृद्धिमनु-

प्रसो ब्रह्मलोकविकारिणीम् ॥ R. 2, 105, 33. श्रुदया (vorzüglich) प्रज्वल- मानेषु अग्निषु INDR. 5, 26. श्रुदया भवान् ज्योतिरिव प्रकाशते MBH. 3, 10035. श्रुद्वि निपतितामिव R. 5, 18, 7. नाधमेश्वरमृद्वये KATHAS. 20, 252. — 2) Vollkommenheit, übernatürliche Kraft: न कामये ऽहं गतिमीश्वरात्परम- ष्टिद्विपुताम् BHĀG. P. 9, 21, 12. LALIT. 310. BURN. INTR. 164, N. 1. 625. Lot. de la b. l. 310. fgg. 818. fg. श्रुद्विक्रीडित 253. श्रुद्विसातात्क्रिया 821. श्रुद्विविधान VJUTP. 8. श्रुद्विवशिता 24. Vgl. ऐश्वर्य. — 3) N. einer Ar- zeneipflanze AK. 2, 4, 3, 31. TRIK. MED. SUÇA. 1, 140, 9. 2, 206, 15. 220, 14. 223, 5. — 4) der personif. Wohlstand ist die Gemahlin Kuvera's MBH. 13, 6750. 7637. HARIV. 7167. 7739. — 5) ein Beinamen der Pārvatī ÇAN- DAR. im ÇKDR.

श्रुदित् (von श्रुद्वि) adj. in einem gedeihlichen Zustande, im Wohl- stande befindlich, ansehnlich, wohlhabend: वनम् MBH. 3, 244. पुरी R. 5, 9, 63. 11, 26. 6, 98, 2. पशुधान्यधनार्द्धमान् (जनपदः) 1, 5, 5. कुलम् UVAṬA in der Einl. zu RV. PRĀT. Von Personen in Bezug auf ihre äussere schöne Erscheinung oder ihren Wohlstand MBH. 3, 11077 (p. 572). R. 2, 104, 12. KUMĀRAS. 7, 52. RAGH. 16, 49. SUÇA. 2, 484, 9. Glück bringend: तत्त्वमु- त्तरम् 502, 7.

श्रुदित् (wie eben) m. N. pr. eines Mannes BURN. INTR. 181.

श्रुद्वि gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. adv. besonders, abgesondert NIR. 4, 25. a) abseits: श्रुद्विद्वेषः कृणुत RV. 8, 18, 11. 10, 49, 7. यदिन्द्र दिवि पार्ये यदध्वयद्वा स्वे सदेनै यत्र वासं 6, 40, 5. श्रुद्वयतो अर्निमिषं रत्नमाणा die abseits Gehenden, die sich verbergen wollen 61, 3. — b) so v. a. je ein- zeln: श्रुद्विदेवा इह यज्ञा चिकितः RV. 3, 23, 1. श्रुद्विधुवेम कविनैषितासः 6, 49, 10. श्रुद्विगया श्रुद्विगुताशमिष्ठाः VS. 8, 20. गुहा शिरो निरुद्धमृधगती RV. 10, 79, 2. 4, 34, 9. — c) vor Andern ausgezeichnet, sonderlich: श्रुद्वि- गित्या स मर्त्यः शशमे देवतासये RV. 8, 90, 1. नाब्रह्मा यज्ञ श्रुद्विज्ञोषति वे 10, 105, 8. 9, 64, 30. किं स श्रुद्विज्ञोषत् 4, 18, 4. 10, 93, 8. — Desselben Ursprungs wie श्रुद्वि.

श्रुद्विज्ञ (श्रुद्वि + मन्त्र) adj. dem die Rede fehlt (?): श्रुद्विज्ञो योनिं य श्रोतुम् AV. 5, 1, 1.

श्रुद्विज्ञी (श्रुद्वि, partic. von श्रुद्वि, + री = री) m. N. pr. eines Mannes: दश श्यावा श्रुद्विज्ञो (gen. sg.) वीतवरास आशवः RV. 8, 46, 23. Ist das Wort appell. (nom. pl.) zu fassen, so trifft es in der Bed. mit dem folg. zu- sammen.

श्रुद्विज्ञार (श्रुद्वि + वार) adj. Güter mehrend: श्रुद्विज्ञारयाग्यै ददाश RV. 6, 3, 2.

श्रुद्वि adj. = रुस्व var. l. des DEVARĀGA zu NAIGH. 3, 2.

श्रुद्वि n. 1) Erdspalte, Schlund (aus welchem heisse Dämpfe auf- steigen) NIR. 6, 35. श्रुद्विसे अत्रिमिश्रितानावनीतमुनिन्ययुः RV. 1, 116, 8. 117, 3. अत्रिर्यहामवरोहं श्रुद्विसेमज्ञोर्वीत् 5, 78, 4. युवमृद्विसेमृत तप्तमत्रय श्रो- मन्वत्तं चक्रयुः सप्तवर्धये 10, 39, 9. — 2) Erdwärme: पूतिदर्विधानर्षिसि- पव्नानाव्युदकानि वर्जयेत् KĀTJ. ÇA. 4, 10, 15. श्रुद्विसेपवो नाश्रीयात् CĪTAT bei DURGĀ zu NIR. 6, 36.

श्रुद्वि (von रम्) 1) adj. a) anstellig, geschickt, kunstfertig, erfindsam, klug NAIGH. 3, 15 (मेधाविन्). अग्रे ब्रह्म श्रुद्विस्ततः RV. 10, 80, 7. प्र सू- नवं श्रुद्विणा वृक्षवत् वृक्षो 170, 1. श्रुद्विर्विप्रः पुराता ज्ञानामनुधिरि उ- शना काव्येन 9, 87, 3. दत्तास श्रुद्विः 1, 51, 2. 10, 105, 6. यो मेधाश्रुद्वि विदुः